विचार बिन्दु

ईश्वर द्वारा निर्मित जल और वायु की तरह सभी चीजों पर सबका समान अधिकार होना चाहिए। –महात्मा गाँधी

दुनिया की आधी आबादी जल संकट का शिकार

संयुक्त राष्ट्र की एक नवीनतम रिपोर्ट में बताया गया कि दुनिया में आधी आबादी यानी करीब 4 अरब लोग जल संकट से जूझ रहे हैं। रिपोर्ट में चेतावनी दी गई है कि दुनिया के 100 सबसे बड़े शहरों में आधे शहरों को गंभीर पानी की कमी का सामना करना पड रहा है। इनमें दिल्ली, बीजिंग, न्यूयॉर्क और रियो जैसे बड़े शहर शामिल हैं। रिपोर्ट के अनुसार 39 शहरों में स्थिति बेहद गंभीर है। रिपोर्ट के मुताबिक, नदियां और झीलें सिकुड़ रही हैं, भूमिगत जल स्तर गिर रहा है और वाटरलैंड सूख रही हैं। जमीन धंस रही है सिंकहोल बन रहे हैं और रेगिस्तान फैल रहे हैं। रिपोर्ट में दिल्ली चौथे स्थान पर है। कोलकाता 9वें, मुंबई 12वें, बेंगलुरु 24वें और चेन्नई 29वें स्थान पर हैं। इसके अलावा हैदराबाद, अहमदाबाद, सूरत और पुणे भी लंबे समय से पानी की कमी झेल रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र शोधकर्ताओं के मुताबिक पिछले कई दशकों के दौरान सिमटते भूजल स्त्रोतों, अत्यधिक दोहन, भूमि क्षरण, बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन से उपजी बाधाओं की वजह से, दुनिया अब जल संकट की अवस्था से आगे बढ़कर वैश्विक जल दिवालिएपन की स्थिति में क़दम रख चुकी है।

आज विश्व में सर्वत्र जल का संकट व्याप्त है। विश्व में चहुंमुखी विकास का दिग्दर्शन हो रहा है। किंतु स्वच्छ जल मिल पाना कठिन हो रहा है। साफ जल की अनुपलब्धता के चलते ही जल जनित रोग महामारी का रूप ले रहे हैं। इंसान जल की महत्ता को लगातार भूलता गया और उसे बर्बाद करता रहा, जिसके फलस्वरूप आज जल संकट सबके सामने है। पृथ्वी का तीन चौथाई भाग पानी से ढका है मगर इस जल का 99 प्रतिशत पानी पिया नहीं जा सकता और पीने योग्य पानी पृथ्वी पर मात्र एक प्रतिशत ही है जो नदियों तालाबों झीलों में ही मौजूद है हैं। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार जल टिकाऊ विकास के लिए बेहद अहम है। सुरक्षित व स्वच्छ पानी तक पहुँच एक बुनियादी मानव अधिकार है। आज जल संकट एक वैश्विक चुनौती है। वर्तमान में विश्व भर में अरबों लोगों की स्वच्छ पानी उपलब्ध नहीं है। हर साल अनुमानत: आठ लाख लोगों की मौत ऐसी बीमारियों के कारण हो जाती है जो असुरक्षित पानी अपर्याप्त स्वच्छता और साफ़–सफ़ाई की कम आदतों के कारण फैलती हैं।

1.35 अरब से अधिक की आबादी के बावजूद भारत के पास दुनिया के ताजे जल संसाधन का केवल 4 प्रतिशत ही है। कई राज्य हैं जो भूजल की कमी के चरम बिंदु को पार कर चुके हैं। जल के बिना मानव जिन्दा नहीं रह सकता। क्योंकि मानव शरीर का एक बड़ा हिस्सा जल होता है। यह सब मानव को मालूम होते हुए भी जल को बिना सोचे-विचारे हमारे जल-स्त्रोतों में ऐसे पदार्थ मिला रहा है जिसके मिलने से जल प्रदूषित हो रहा है। जल हमें नदी, तालाब, कुएँ, झील आदि से प्राप्त हो रहा है। जल की उपलब्धता को लेकर वर्तमान में भारत ही नहीं अपितु समूचा विश्व चिन्तित है। जल ही जीवन है। जल के बिना सृष्टि की कल्पना नहीं की जा सकती। मानव का अस्तित्व जल पर निर्भर करता है।

दुनिया का 70 फीसदी हिस्सा पानी से घिरा है लेकिन उसमें से पीने योग्य पानी लगभग तीन फीसदी ही है। 97 फीसदी पानी ऐसा है जो पीने लायक ही नहीं है। अब तीन फीसदी पानी पर पूरी दुनिया जीवित है। जल संसाधन मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों से पता चलता है कि भारत में एक वर्ष में उपयोग किए जाने वाले जल की शुद्ध मात्रा अनुमानित 1,121 बिलियन क्यूबिक मीटर है। जबकि वर्ष 2025 में पीने वाले पानी की मांग 1093 और 2050 तक बढ़कर 1447 बीसीएम तक पहुंच सकती है। 1.35 अरब से अधिक की आबादी के बावजूद भारत के पास दुनिया के ताजे जल संसाधन का केवल 4 प्रतिशत ही है। वहीं संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारत में जल संकट लगातार गहराता जा रहा है। कई राज्य हैं जो भूजल की कमी के चरम बिंदु को पार कर चुके हैं। रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया कि उत्तर पश्चिमी क्षेत्र में 2025 तक गंभीर रूप से भूजल संकट गहरा सकता है। जल के बिना मानव जिन्दा नहीं रह सकता। क्योंकि मानव शरीर का एक बड़ा हिस्सा जल होता है। यह सब मानव को मालूम होते हुए भी जल को बिना सोचे-विचारे हमारे जल-स्त्रोतों में ऐसे पदार्थ मिला रहा है जिसके मिलने से जल प्रदूषित हो रहा है। जल हमें नदी, तालाब, कुएँ, झील आदि से प्राप्त हो रहा है। जल की उपलब्धता को लेकर वर्तमान में भारत ही नहीं अपितु समूचा विश्व चिन्तित है। जल ही जीवन है। जल के बिना सृष्टि की कल्पना नहीं की जा सकती। मानव का अस्तित्व जल पर निर्भर करता है। जनसंख्याा में तेजी हो रही वृद्धि, शहरीकरण, औद्योगीकरण, जलवायु परिवर्तन और अकुशल जल प्रबंधन प्रथाओं जैसे कारकों के संयोजन की वजह से पानी की कमी की व्यापक समस्या पैदा होती जा रही है। आशंका जताई जा रही है कि आने वाले समय में पानी की कमी के गंभीर और दूरगामी परिणाम हो सकते हैं।

भूजल की वर्तमान स्थिति को सुधारने के लिये भूजल का स्तर और न गिरे इस दिशा में काम किए जाने के अलावा उचित उपायों से भूजल संवर्धन की व्यवस्था हमें करनी होगी। पानी की कमी के चलते निरन्तर खोदे जा रहे गहरे कुओं और ट्यूबवेलों द्वारा भूमिगत जल का अन्धाधुन्ध दोहन होने से भूजल का स्तर निरन्तर घटता जा रहा है। देश में जल संकट का एक बड़ा कारण यह है कि जैसे-जैसे सिंचित भूमि का क्षेत्रफल बढ़ता गया वैसे-वैसे भूगर्भ के जल के स्तर में गिरावट आई है। भूजल दोहन के अंधाधुंध दुरुपयोग को यदि समय रहते रोका नहीं गया, तो आने वाली पीढ़ियों को इसके भयानक परिणाम भुगतने होंगे। सरकार को जनता में जागरूकता लाने के लिए विशेष प्रबन्ध और उपाय करने होंगे। आवश्यकता इस बात की है कि हम जल के महत्व को समझे और एक-एक बूंद पानी का संरक्षण करें तभी लोगों की प्यास बुझाई जा सकेगी।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

सायबर क्राइम और बेरोजगारी

राम निवास बैरवा

कई मामलों में यह पाया गया है कि बेरोजगारी तथा बेरोजगार पूंजीवादी अपराध तन्त्र की अनिवार्य आवश्यकता है। अपराध तन्त्र बेरोजगारों को रोजगार देता है या बेरोजगारी पूंजीवादी अपराध तन्त्र को बढ़ावा देती है, इस तथ्य पर अलग-अलग विचार और मान्यताएं हो सकती है। परन्तु अपने सम्पूर्ण ताने-बाने में अपराध तन्त्र को पोषण बेरोजगारी और बेरोजगारों से कई कोणों से मिलता है।

पूंजीवादी लोकतन्त्र में जहां, सामुदायिक संसाधन का संकेद्रण कुछ ही लोगों, पूंजीपतियों और पूंजीवाद के पोषक नौकरशाहों के हाथों में होता है; वहीं आम जनसंख्या का बहुत बड़ा भाग बेरोजगार होता जाता हैं क्योंकि सामुदायिक संसाधनों के संकेद्रण के साथ ही गरीबी और गरीबों की संख्या बढ़ती जाती है।

जब "पैसा कैसे कमाया जाये" जैसी बातों पर पूंजीवादी सलाहकारों के द्वारा सलाह दी जाती है तो वह उच्च वर्गों, बड़े अफसरों तथा सत्तासीन बड़े नेताओं के लिए नहीं होती है बल्कि उच्च मध्यम वर्गों या मध्यम वर्गों के लिए होती है जो पूंजीवादी चमक-धमक में जीना चाहते हैं, परन्तु पूंजीगत संसाधनों की कमी उन्हें और पैसा बनाने के लिए प्रेरित करती है, अत: जहां से भी, जो भी उन्हें और पैसा बनाने को प्रेरित करता है, वे आसानी से उस ओर चल पड़ते हैं। ड्रग माफिया, स्मगलिंग, शेयर बाजार, व्यापार, दलाली आदि ये वो बड़े धंधे है जिनमें आमतौर पर दूसरों को अपने व्यवसाय के जाल में फसा कर पैसा बनाते है और फलते-फूलते हैं।

पैसा बनाना और पैसा कमाना दोनों अलग-अलग व्यवसाय हैं। जहां पैसा कमाने में स्वयं की मेहनत होती है वहीं पैसा बनाने में दूसरों को अपने जाल में फंसाना होता है। बेरोजगारी को जब मेहनत से कमाने का अवसर नहीं दिया जाता है तब वे पैसा बनाने के रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित होते हैं और साथ ही अपने जैसे दूसरे बेरोजगारों को अपने जाल में फंसने के लिए उकसाते हैं।

सायबर क्राइम की दुनिया में संचार साधनों के विकास का भरपूर फायदा उठाया जाता है। यह एक तथ्य है कि सायबर क्राइम का सारा लेन-देन केवल बैंक खातों के माध्यम से ही होता है; इसके लिए उन्हें बहुत बड़ी संख्या में और विभिन्न स्थानों पर बैंक खातों के संचालन की आवश्यकता होती है।

सायबर क्राइम में लड़कों और लड़कियों की भूमिकाएं समान रूप से महत्वपूर्ण होती है। ज्यों-ज्यों उच्च स्तर की शिक्षा लड़कों-लड़कियों को भावी जीवन का सम्मोहन, अच्छे रोजगार के सपने दिखाती है वहीं बेरोजगारी के अनिश्चित जीवन की संभावनाए उन्हें विचलित भी कर देती हैं। इसी डर और सम्भावना के बीच लड़कियां दोहरा रास्ता अपनाकर अपने सौंदर्य और देह आकर्षण को पैसा बनाने के लिए इस्तेमाल करने लगती हैं जहां वे संचार साधनों के माध्यम से पैसा बनाने के लिए लालयित लोगों को आकर्षित करके उन्हें अपने अपराधिक व्यवसाय में फंसाने का सफल प्रयास करती हैं; वहीं लड़कों को कुछ पैसा बनाने का लालच देकर बैंक खाते खुलवाकर उनकी पास बुकें, चैक बुकें और एटीम कार्ड अपने पास रख लेते हैं तथा उन बैंक खातों में दिये जाने वाले मोबाइल नंबर उस खाता धारकों के नहीं होते हैं बल्कि सायबर क्रिमिनल्स के पास ही होते हैं। मोबाइल कम्पनियां अपने मोबाइल धारकों की संख्या को ज्यादा से ज्यादा बढ़ाने के लिए अपने एजेंटों के माध्यम से थोक में फर्जी के.वाई.सी., पहचान पत्रों के आधार पर कई मोबाइल सिम देती हैं। इस प्रकार सायबर अपराधियों के पास सैकड़ों की संख्या में मोबाइल संख्याएं, सैकड़ों की संख्या में बैंक खाते होते हैं। जिस प्रकार से नशीली दवाओं को बेचने वाले स्कूलों, कॉलेजों और उच्च शिक्षण संस्थानों के आस-पास रहकर विद्यार्थियों का नशे का आदि बनाते है उसी प्रकार ऐसे शिक्षण संस्थानों के वयस्क युवक-युवतियों को कुछ पैसों का लालच देकर उनसे बैंक खाते खुलवाते है। इस प्रकार से वे तात्कालीक आमदनी को देखकर ऐसा करते है और अपने भविष्य को सायबर अपराधियों के पास बंधक रख देते है और पुलिस रिकार्ड में अपराधी बन जाते हैं।

ऐसा नहीं है कि सायबर अपराधी ही इस प्रकार के बैंक खातों को अपने पास रखते हों बल्कि कई लोग सिर्फ बैंक खातों का 'बैंक' बनाकर रखते हैं जो मांग के अनुसार सायबर अपराधियों को जानकारी देते है और उन दिये गये बैंक खातों से लेन-देन केवल कुछ ही घंटों के लिए किया जा सकता है। इनमें बचत खाते और करंट एकाउंट भी होते है जो छोटी-मोटी कम्पनियों, फर्मों के नाम से बनाये जाते है। ऐसी पाबंदी लगाने से सायबर अपराधी यह दबाव बनाते है कि जाल में फंसा व्यक्ति जल्दी से जल्दी पैसा उन बैंकों से ट्रांसफर कर दे और इस प्रकार से उन सायबर अपराधियों के द्वारा पैसा बटोरने का काम हाथों-हाथ पूरा हो जाये। जब पुलिस सायबर अपराधियों पर कोई कार्यवाही करती है तो वह सिर्फ पैसों का लेन-देन करने वाले बैंक खातों और बैंक खाता धारकों के खिलाफ ही करती है। असली सायबर अपराधी अदृश्य ही बने रहते है।

इस प्रकार से बेरोजगारी के कारण सायबर अपराध का विशाल ताना-बाना बुना जाता है जिसमें अन्तत: बेरोजगार युवक-युवतियां ही लक्ष्य होते है; जिनको अपना सम्मानजनक जीवन जीने के लिए रोजगार प्राप्त करना अंधकारमय लग रहा होता है। सामुदायिक संसाधनों के पूंजीवादी दुरूपयोग के चलते ही यह सब किया जा रहा हैं और यह सम्भव बना है संचार संसाधनों के संकेन्द्रित पूजीवादी दुरूपयोग के कारण।

–राम निवास बैरवा,
पूर्व क्षेत्रीय भविष्यनिधि आयुक्त

भारत का आर्थिक सर्वेक्षण 2025-26 : एक आलोचनात्मक दृष्टि

डॉ. सुरेंद्रसिंह शेखावत

भारत सरकार का आर्थिक सर्वेक्षण 2025-26, जो 29 जनवरी 2026 को संसद में पेश किया गया, देश की आर्थिक स्थिति का एक व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। मुख्य आर्थिक सलाहकार वी. अनंत नागेश्वरन के नेतृत्व में तैयार यह दस्तावेज़ पुशिंग द ग्रोथ फ्रंटियर की थीम पर केंद्रित है, जो वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच भारत की मजबूत विकास क्षमता को रेखांकित करता है। सर्वेक्षण वित्त वर्ष 2026 (2025-26) के लिए वास्तविक जीडीपी विकास को 7.4 प्रतिशत अनुमानित करता है, जबकि वित्त वर्ष 2027 (2026-27) के लिए 6.8-7.2 प्रतिशत की रेंज में रखता है।

यह भारत को लगातार चौथे वर्ष दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित करता है। हालांकि, यह सर्वेक्षण केवल सकारात्मक चित्रण नहीं है; इसमें वैश्विक भू-राजनीतिक जोखिमों, मुद्रा अवमूल्यन और घरेलू चुनौतियों की चर्चा भी है। इस लेख में हम सर्वेक्षण की मजबूतियों, कमजोरियों और नीतिगत निहितार्थों की आलोचनात्मक समीक्षा करेंगे, जो विकसित भारत 2047 के लक्ष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ है।

सर्वेक्षण की सबसे बड़ी ताकत भारत की मैक्रोइकोनॉमिक स्थिरता को उजागर करना है। 2026 में जीडीपी विकास 7.4 प्रतिशत होने का अनुमान है, जो मजबूत घरेलू मांग, निजी उपभोग और निवेश पर आधारित है। निजी उपभोग जीडीपी का 61.5 प्रतिशत तक पहुंच गया है, जो एक दशक का उच्चतम स्तर है, जबकि ग्रॉस फिक्स्ड कैपिटल फॉर्मेशन (जीएफसीएफ) 30 प्रतिशत के आसपास है। मुद्रास्फीति अप्रैल-दिसंबर 2025 में 1.7 प्रतिशत के बहु-वर्षीय निचले स्तर पर रही, जो आपूर्ति-पक्ष की दक्षताओं और कृषि उत्पादकता से संभव हुई। राजकोषीय घाटा 2021 के 9.2 प्रतिशत से घटकर 2025 में 4.8 प्रतिशत हो गया है, और 2026 के लिए 4.4 प्रतिशत का लक्ष्य प्राप्त करने की राह पर है। बैंकिंग सेक्टर मजबूत है, एनपीए कम हैं, और विदेशी मुद्रा भंडार दोगुना हो चुके हैं। सर्वेक्षण गोल्डीलॉक्स मोमेंट की बात करता है, जहां उच्च विकास और निम्न मुद्रास्फीति का संतुलन है। यह वैश्विक चुनौतियों भू राजनीतिक संघर्ष, व्यापार विखंडन के बीच भारत के बाजार के लचीलापन को रेखांकित करता है।

सर्वेक्षण की एक और सराहनीय विशेषता संरचनात्मक परिवर्तनों पर जोर है। सेवा क्षेत्र की वृद्धि, विनिर्माण पुनरुत्थान, बुनियादी ढांचे का विस्तार, डिजिटल समावेशन और गरीबी में कमी को उजागर किया गया है। बेरोजगारी 4.9 प्रतिशत तक गिर गई है, श्रम बल भागीदारी बढ़ रही है, और औपचारिक रोजगार विस्तारित हो रहा है। विश्व बैंक के मानकों पर चरम गरीबी 5.3 प्रतिशत और निम्न-मध्यम आय गरीबी 23.9 प्रतिशत है, जो आय वितरण में सुधार दर्शाता है। कर सुधारों जैसे कॉर्पोरेट टैक्स में कटौती, व्यक्तिगत आयकर राहत और जीएसटी ओवरहॉल के परिणाम दिख रहे हैं। सर्वेक्षण जीएसटी ई-वे बिल सिस्टम के पुनरावलोकन की सिफारिश करता है, जो कर अनुपालन को मजबूत करेगा। इसके अलावा, यह निजी क्षेत्र को रिसर्च और डेवलपमेंट में निवेश बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करता है, जो मेक इन इंडिया और पीएलआई योजनाओं के साथ जुड़ा है।

हालांकि, सर्वेक्षण की आलोचना भी उतनी ही जरूरी है। सबसे पहले, यह दस्तावेज़ अत्यधिक जटिल और विश्लेषणात्मक रूप से कमजोर लगता है। नाममात्र जीडीपी विकास 2026 के लिए मात्र 8 प्रतिशत अनुमानित है, जबकि वास्तविक विकास 7.4 प्रतिशत है, जो केवल 0.6 प्रतिशत का अंतर दर्शाता है। लेकिन रुपए का 6.5 प्रतिशत अवमूल्यन डॉलर जीडीपी विकास को मात्र 1.5 प्रतिशत तक सीमित कर देता है, जिसकी व्याख्या सर्वेक्षण में नहीं है। वैश्विक अनिश्चितताओं का उल्लेख तो है, लेकिन ठोस समाधान कम हैं। सर्वेक्षण सावधानी, न कि निराशावाद की बात करता है, लेकिन यह पैराडॉक्स ऑफ 2025 को स्वीकार करता है, जहां भारत की मजबूत प्रदर्शन वैश्विक प्रणाली से टकरा रही है, जो मुद्रा स्थिरता या पूंजी प्रवाह नहीं दे रही।

रोजगार और विनिर्माण क्षेत्र की चुनौतियां सर्वेक्षण में उजागर तो हैं, लेकिन पर्याप्त गहराई से नहीं। 2024-25 बजट में घोषित तीन रोजगार-लिंक्ड प्रोत्साहन योजनाएं (ईएलआई) और 1 करोड़ इंटर्नशिप योजना विफल रही हैं। इंटर्नशिप में मात्र 10,000 युवा शामिल हुए, जबकि ईएलआई संदिग्ध नौकरियां पैदा कर रही हैं।

विनिर्माण जीडीपी मेक इन इंडिया और पीएलआई के बावजूद 12-13 प्रतिशत पर ठहरा हुआ है। सर्वेक्षण निजी क्षेत्र की जोखिम-निवृत्ति और तकनीकी लाइसेंसिंग पर निर्भरता की आलोचना करता है, जो आर एंड डी में बाजार विफलता दर्शाता है। 12 लाख रुपये तक की आय को कर-मुक्त करने और ऑटोमोबाइल पर जीएसटी कटौती से राजकोषीय प्रदर्शन पर दबाव है। सर्वेक्षण एक्सचेंज रेट जोखिमों और नकारात्मक पूंजी प्रवाह की चेतावनी देता है, लेकिन विनिर्माण को गति देने के लिए कोई नई रणनीति नहीं सुझाता।

सर्वेक्षण की एक और कमी वैश्विक संदर्भ में भारत की रणनीतिक स्थिति पर है। यह स्ट्रैटेजिक रेजिलिएंस और स्ट्रैटेजिक इंडिस्पेंसेबिलिटी की बात करता है, लेकिन वैश्विक व्यापार की गैर-पारस्परिकता और बाजारों की तटस्थता की कमी को स्वीकार करता है। विशेषज्ञों का मानना है कि सर्वेक्षण भारत की विकास क्षमता को बढ़ाकर 7 प्रतिशत कर देता है, लेकिन यह पूंजी संचय, श्रम इनपुट और कुल कारक उत्पादकता पर आधारित है। हालांकि, राज्य वित्त की असमानता, वैश्विक अनिश्चितताएं और मुद्रा दबाव चुनौतियां हैं, जिन्हें नीति और निजी क्षेत्र भागीदारी से निपटना होगा। सर्वेक्षण महिलाओं के उद्यिमता, कर सुधारों और बैंकिंग मजबूती पर जोर देता है, लेकिन क्रियान्वयन की चुनौती को कम करके आंकता है।

कुल मिलाकर, आर्थिक सर्वेक्षण 2025-26 भारत की विकास यात्रा का एक सकारात्मक लेकिन यथार्थवादी चित्रण है। यह रिफॉर्म एक्सप्रेस की बात करता है, जहां दशक भर के सुधारों ने 7 प्रतिशत विकास को संरचनात्मक आधार बनाया है। लेकिन आलोचना यह है कि यह अर्थव्यवस्था की कमजोरियों का गहन निदान नहीं करता, जैसे रोजगार योजनाओं की विफलता या विनिर्माण की स्थिरता। सरकार को सर्वेक्षण की सिफारिशों पर तेज क्रियान्वयन की जरूरत है, जैसे जीएसटी सरलीकरण, निजी आरएंडडी प्रोत्साहन और व्यापार नीति पुनर्कलन। वैश्विक विखंडन में भारत की सिस्टेमेटिक इंडिस्पेंसेबिलिटी हासिल करने के लिए, केवल विकास आंकड़ों से आगे बढ़कर जोखिम प्रबंधन और नवाचार पर फोकस जरूरी है। यदि ये कमियां दूर की गईं, तो विकसित भारत का सपना साकार हो सकता है; अन्यथा, वैश्विक दबावों में यह एक खोया अवसर साबित होगा।

– डॉ. सुरेंद्रसिंह शेखावत,
(लेखक स्वतंत्र चिंतक है।)

समय से आगे बढ़ता महात्मा गांधी : एक वैश्विक संत की निरंतर उभरती महानता

प्रो. (डॉ.) सुमन कुमार शर्मा

30 जनवरी का दिन भारत ही नहीं, बल्कि संपूर्ण विश्व के लिए आत्ममंथन का अवसर है। यह दिन महात्मा गांधी की शहादत की स्मृति से जुड़ा है-एक ऐसे व्यक्तित्व की, जिनका जीवन और विचार समय के साथ और अधिक प्रासंगिक, प्रभावशाली और प्रेरणादायी होते जा रहे हैं। आज केवल भारत के राष्ट्रिपता नहीं हैं, बल्कि वे विश्व-मानवता के नैतिक पथप्रदर्शक और वैश्विक संत के रूप में प्रतिष्ठित हो चुके हैं।

गांधी जी की महानता किसी एक घटना, आंदोलन या राष्ट्र तक सीमित नहीं थी। सत्य और अहिंसा जैसे उनके सिद्धांत सार्वकालिक और सार्वभौमिक हैं। जैसे-जैसे दुनिया हिंसा, युद्ध, आतंकवाद, असहिष्णुता और नैतिक पतन की चुनौतियों से जूझ रही है, वैसे-वैसे गांधी के विचार और अधिक उजागर होकर सामने आ रहे हैं। आज वैश्विक मंचों पर, संयुक्त राष्ट्र से लेकर विश्व के प्रमुख विश्वविद्यालयों तक, गांधी के विचारों पर विमर्श हो रहा है। यह इस बात का प्रमाण है कि उनकी महानता समय के साथ क्षीण नहीं हुई, बल्कि निरंतर बढ़ी है।

महात्मा गांधी का जीवन स्वयं एक जीवंत प्रयोगशाला था-जहाँ विचार और आचरण में कोई अंतर नहीं था। वे जो कहते थे, वही जीते थे। सादगी, आत्मसंयम, सत्यनिष्ठा और करुणा उनके जीवन के मूल तत्व थे। आज जब भौतिकता और उपभोगवाद समाज को दिशा दे रहे हैं, गांधी का सादा जीवन, उच्च विचार का संदेश और भी प्रासंगिक हो गया है। जलवायु परिवर्तन, संसाधनों का अंधाधुंध दोहन और पर्यावरण संकट के दौर में गांधी का प्रकृति के साथ संतुलन का दृष्टिकोण विश्व के लिए मार्गदर्शक बन रहा है। गांधी जी ने यह सिद्ध किया कि शक्ति केवल हथियारों में नहीं, बल्कि नैतिक साहस में होती है। बिना हिंसा के, बिना घृणा के, उन्होंने एक विशाल साम्राज्य को झुकने पर विवश कर दिया। आज दुनिया के अनेक सामाजिक और नागरिक आंदोलन-चाहे वे नस्लभेद के विरुद्ध हों, मानवाधिकारों के लिए हों या शांति स्थापना के प्रयास-कहीं न कहीं गांधी से प्रेरणा लेते हैं। नेल्सन मंडेला से लेकर मार्टिन लूथर किंग जूनियर तक, अनेक वैश्विक नेताओं ने गांधी को अपना पथप्रदर्शक माना।

गांधी की महानता का एक और पक्ष उनका मानवीय दृष्टिकोण है। वे अंतिम व्यक्ति की चिंता करते थे-अंत्योदय का सिद्धांत। आज जब विकास की परिभाषा पर प्रश्नचिह्न लगे हुए हैं, गांधी का यह विचार कि समाज की प्रगति का मूल्यांकन सबसे कमजोर व्यक्ति की स्थिति से होना चाहिए, विश्व के लिए एक नैतिक कसौटी बन गया है। असमानता, गरीबी और सामाजिक बहिष्कार के विरुद्ध संघर्ष में गांधी की सोच आज भी उतनी ही प्रखर है।

30 जनवरी को गांधी को स्मरण करना केवल श्रद्धांजलि अर्पित करना नहीं है, बल्कि उनके विचारों को आत्मसात करने का संकल्प लेना है। उनकी शहादत हमें यह सिखाती है कि सत्य का मार्ग कठिन हो सकता है, लेकिन वही स्थायी और सार्थक होता है। समय बीतने के साथ गांधी एक ऐतिहासिक व्यक्ति से बढ़कर एक नैतिक चेतना बन चुके हैं-ऐसी चेतना जो सीमाओं, राष्ट्रों और संस्कृतियों से परे है।

निस्संदेह, महात्मा गांधी की महानता दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। वे आज भी दुनिया को यह संदेश दे रहे हैं कि हिंसा के अंधकार में अहिंसा का दीपक ही मानवता को सही दिशा दे सकता है। यही कारण है कि गांधी आज भी जीवित हैं-अपने विचारों में, अपने आदर्शों में और विश्व की अंतरात्मा में, एक सच्चे वैश्विक संत के रूप में।

–प्रो. (डॉ.) सुमन कुमार शर्मा, आचार्य, राजनीति विज्ञान उच्च शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार।

राशिफल शनिवार 31 जनवरी, 2026

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास, शुक्ल पक्ष, त्रयोदशी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2082, पुर्नवसु नक्षत्र रात्रि 1:34 तक, विष्कुम्भ योग दिन 1:33 तक, तैतिल करण प्रात: 8:26 तक, चन्द्रमा रात्रि 8:01 से कर्क राशि में संचार करेगा।

गृह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-मकर, बुध-मकर, गुरू-मिथुन, शुक्र-मकर, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज रवियोग रात्रि 1:34 तक है। आज शुक्र उदय पश्चिम में रात्रि 3:15 पर होगा। आज विश्वकर्मा जयन्ती, गुरू गोरखनाथ जयन्ती है। आज चतुरदशी तिथि का क्षय हुआ है। आज ललिता जयन्ती है, जिनेन्द्र रथ यात्रा (जैन) है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 8:38 से 9:59 तक, चर 12:40 से 2:01 तक, लाभ-अमृत 2:01 से 4:43 तक।
राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 7:17, सूर्यास्त 6:03

मेष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। घर-परिवार में चल रहा आपसी मतभेद दूर होगा।

धनु
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

वृष
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। चलते व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

मकर
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा।

तुला
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कुंभ
परिवार में महत्वपूर्ण एवं आवश्यक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक यात्रा संभव है।

कर्क
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक/व्यक्तिगत कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है।

वृश्चिक
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

मीन
घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

उदयपुर के बड़गांव में फिर दिखा लैपर्ड का मूवमेंट

उदयपुर, (निसं)। शहर में शुक्रवार तड़के उस वक्त दहशत का माहौल बन गया, जब बड़गांव क्षेत्र में लैपर्ड का मूवमेंट देखा गया। अचानक आबादी क्षेत्र में पहुंचे लैपर्ड ने एक घर के प्रवेश द्वार पर चढ़कर कुछ देर तक इलाके में अफरा-तफरी मचा दी और फिर कूदकर भाग गया। लैपर्ड का वीडियो भी सामने आया है। इस घटना के बाद कॉलोनीवासियों में डर का माहौल है, लोगों ने बच्चों को अकेले बाहर न निकलने की सख्त हिदायत दी है।

बड़गांव के प्रशासक संजय व्यास के अनुसार बड़गांव मुख्य मार्ग पर हल्दीघाटी हाउस के पास श्री कॉम्पलेक्स कॉलोनी में आज सुबह लैपर्ड देखा गया और एक घर के सीसीटीवी फुटेज में भी कैद हो गया। व्यास ने बताया कि कॉलोनी में रहने वाले मदनलाल व्यास के घर के वहां

■ आबादी क्षेत्र में पहुंचे लैपर्ड ने एक घर के प्रवेश द्वार पर चढ़कर अफरा-तफरी मचा दी

लैपर्ड था और उसके बाद गली में से आगे निकला। व्यास परिवार के सदस्य दीपक व्यास बताते हैं कि सुबह करीब सवा छह बजे हमारे घर के सामने रहने वाली आंटी ने बताया कि कुछ समय पहले गली से लैपर्ड निकलते उन्होंने देखा, आप कैमरे चेक कीजिए। दीपक बताते हैं कि इस पर उन्होंने अपने घर के सीसीटीवी कैमरे के फुटेज देखे। उन्होंने बताया कि सीसीटीवी फुटेज चेक किया तो सामने आया कि आज सुबह 5 बजकर 52 मिनट पर एक लैपर्ड घर के एंट्री प्वाइंट पर फाटक से जुड़ी दीवार पर चढ़ा और कुछ ही सेकेंड में कूद कर लैपर्ड आगे कृषि विज्ञान केंद्र की तरह चला गया। दीपक ने बताया कि गत वर्ष 16 जनवरी 2025 को इसी गली में लैपर्ड सीसीटीवी फुटेज में कैद हुआ था। उन्होंने बताया कि जैसे ही कॉलोनी में लैपर्ड की बात सामने आई तो वहां लोग घबरा गए। कॉलोनीवासियों की सूचना पर अधिकारियों को सूचना दी।